* श्रीगणेशाय नमः *

नित्यकर्म पद्धतिः

भाषा-टीका

संग्रही:—

ज्यौतिषाचार्य-प० कैलासपति मिश्र

अस्सी-काशी।

प्रकाशकः—

ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर

राजादरवाजा, ब्रांच-कचौड़ीगली,

वाराणसी।

मूल्य ० Rs1 - 50

❀ श्रीगणेशाय नमः ❀

नित्यकर्मपद्धतिः

भाषा टीका।

संग्रहकर्ता:—

ज्यौतिषाचार्य-पं॰ कैलासपति मिश्र,

अस्सी काशी।

प्रकाशक—

ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर

राजादरवाजा, ब्राञ्च-कचौड़ीगली,

वाराणसी।

मूल्य [illegible] रुपया।

❋ अथ ❋

नित्यकर्म-पद्धतिः

शय्या-त्याग—

आचरणीय नित्य कर्मों में प्रबोध (जागने) का प्रथम स्थान है। मनु का वचन है कि—

ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय धर्मार्थावनु चिन्तयेत्।
कायक्लेशांश्च तन्मूलान्वेतत्त्वार्थमेव च॥

ब्राह्म मुहूर्त रात्रि के उपान्त्य समय को कहते हैं। उस समय निन्द्रा-त्यागकर प्रबुद्ध हो ईश्वर का चिन्तन करना चाहिये। निन्द्रा-त्यागने के बाद तुरत हाथों की हथेली को देखे।

हस्त दर्शन—

कराग्रे वसते लक्ष्मीः कर मध्ये सरस्वती।
करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कर दर्शनम्॥

श्लोक को पढ़कर लक्ष्मी सरस्वती और ब्रह्मा का स्मरण करते हुए हाथों की हथेली को देखे। इसके पश्चात् इन मंत्रों द्वारा भगवान् की प्रार्थना करे।

प्रार्थना—

न जातु कामान्न भयान्न लोभा-
द्धर्मं त्यजेज्जीवितस्यापि हेतोः ।
धर्मो नित्यः सुखदुखे त्वनित्ये,
जीवो नित्यो हेतुरस्यत्वनित्यः ॥१॥

प्रातः स्मरामि भवभीति महार्ति शान्त्यै,
नारायणं गरुडवाहनमब्जनाभम् ।
ग्राहाभिभूत वरवारण मुक्ति हेतुं,
चक्रायुधं तरुणवारिजपत्रनेत्रम् ॥२॥

प्रातर्नमामि चतुरानन वन्द्यमान-
मिच्छानुकूलमखिलं च वरं दधानम् ।
तं तुन्दिलं द्विरसनाधिपयज्ञसूत्रं,
पुण्यं विलासचतुरं शिवयोः शिवाय ॥३॥

प्रातर्भजामि सवितारमनन्तशक्तिं,
पापौघ शत्रुभय रोगहरं परं च ।
तं सर्वलोक कलनात्मक काल मूर्तिम्
तं कण्ठबन्धन विमोचनमादिदेवम् ॥४॥

प्रातर्नमामि महिषासुर चण्ड मुण्ड-
शुम्भासुर प्रमुख दैत्यविनाशदक्षाम् ।
ब्रह्मेन्द्ररुद्रमुनिमोहन केलिशीलाम्,
चण्डीं समस्तसुरमूर्तिमनेकरूपाम्॥५॥
प्रातर्नमामि गिरिशं गिरजार्धदेहम्
सर्गस्थिति प्रलय कारणमादिदेवम् ।
विश्वेश्वरं विजित विश्वमनोभिरामम्,
संसार रोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥६॥

ईश्वर प्रार्थना करने के बाद शय्या त्याग करने से पहले पृथ्वी की प्रार्थना करे ।

भू प्रार्थना—

समुद्रवसने देवि पर्वत-स्तन-मण्डले ।
विष्णु पत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥

पृथिवी देवी को नमस्कार कर इनका दर्शन करे ।

श्रोत्रियं सुभगां गां च अग्निमग्निचितिं तथा ।
प्रातरुत्थाय यःपश्येदापद्भ्यः स प्रमुच्यते ॥
रोचनं चन्दनं गन्धान् मृदंग दर्पणं मणिम् ।
गुरुमग्निं रविं पश्येन्नमस्येत्प्रातरेव हि ॥

इसके बाद आचार्य, पिता, माता, भाई आदि को प्रणाम करे शास्त्रों में इसकी महिमा बतायी गयी है।

आचार्यो ब्रह्मणो मूर्तिः पिता मूर्तिः प्रजापतेः।
माता पृथिव्या मूर्तिस्तु, भ्राता स्वमूर्तिरात्मनः॥

अर्थात् आचार्य ब्रह्मा के स्वरूप हैं, पिता प्रजापति के, माता पृथ्वी की और भाई अपना स्वरूप है।

अभिवादन के विषय में शास्त्रों का यह निर्देश मिलता है।

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्द्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम्॥

अर्थात् बड़ों का अभिवादन (प्रणाम) और बड़ों की सेवा करनेवाले की आयु विद्या, यश और बल बढ़ता है।

शौच विधि—

मुख प्रक्षालन करके मल-मूत्र विसर्जनके लिये जाना चाहिये। इस सम्बन्ध में यह नियम है कि यज्ञोपवीतको दाहिने कान में लपेट कर वस्त्र से शिर ढक ले। दिन में उत्तर तथा रात्रि में दक्षिण की ओर मुँह करके मल-मूत्र विसर्जन करना चाहिये।

मूत्रोच्चारं समुत्सर्गं दिवा कुर्यादुदङ्मुखः।
दक्षिणाभिमुखो रात्रौ सन्धयोश्च यथा दिवा॥

शौच के समय बोलना, थूकना अथवा हाँफना निषिद्ध है।

"वाचं नियम्य यत्नेन ष्ठीवनोच्छ्वास वर्जितः"
उच्चारे मैथुने चैव प्रस्रावे दन्तधावने ।
श्राद्धे भोजनकाले च षट्सु मौनं समाचरेत् ॥

वायु, अग्नि, ब्राह्मण, सूर्य और जलके समीप मूत्र त्याग न करे ।

"वाय्वग्निविप्रानादित्यमपः पश्यन् तथैव च"

मल त्याग के बाद शरीर शुद्ध्यर्थं मिट्टी और जल का व्यवहार करना चाहिये ।

वसा शुक्रमसृङ्मज्जा मूत्रं विट् कर्ण विग्नखाः ।
श्लेष्माश्रुदूषिका स्वेदो द्वादशैते नृणां मलाः ॥
आददीत मृदः पञ्च षट्सु पूर्वेषु शुद्धये ।
उत्तरेषु तु षट्स्वद्भिः केवलाभिर्विशुद्ध्यति ॥

चर्बी, शुक्र (वीर्य) रक्त, मज्जा, मूत्र, विष्ठा, कर्णमल नख, श्लेष्मा, (कफ) अश्रु, आँख का मल और पसीना ये मनुष्य शरीर के १२ मल हैं । इनमें पहले ६ की मिट्टी तथा जलसे और दूसरे ६ की केवल जल से शुद्धि होती है ।

मिट्टी कहाँ कितनी बार लगायी जाय—

एका लिङ्गे गुदे त्रीणि दश वामकरे मृदः ।

हस्तद्वये च सप्तान्याश्चरणौ च त्रिभिस्त्रीभिः ॥
कृत्वाथ शौचं प्रक्षाल्य पादौहस्तौ च मृज्जलैः ।
निबद्धशिखकच्छस्तु द्विज आचमनं चरेत् ॥

इस प्रकार शुद्ध होकर आचमन करे ।

दन्त धावन—

बिना मुख शुद्धि के मंत्र फलदायक नहीं होते, अत्रि-स्मृति में कहा है कि—

मुखे पर्युषिते नित्यं भवत्यप्रयतो नरः ।
तदार्द्रकाष्ठ शुष्कं वा भक्षयेद्दन्त धावनम् ॥

दातून कब करना चाहिये, कैसे करना चाहिये और किस काष्ठ का करना चाहिये ।

प्रक्षाल्य पादौ हस्तौ च मुखं च सुसमाहितः ।
दक्षिणं बाहुमुद्धृत्य कृत्वा जान्वन्तरां ततः ॥
तिक्तं कषायं कटुकं सुगंधिं कण्टकान्वितम् ।
क्षीरिणो वृक्षगुल्मानां भक्षयेद्दन्तधावनम् ॥

तिक्त, कषाय, कटु सुगन्धित, काँटावाला और दूधवाले वृक्षकी दातोन प्रशस्त है । मौलसिरी की दातून तो सर्वश्रेष्ठ है । जिससे—

"दन्ता भवन्ति चपला अपि वज्र तुल्या"

दन्त धावन कितनी बड़ी हो—

द्वादशाङ्गुलिकं विप्रे काष्ठमातुर्मनीषिणः।
शूद्र विट् क्षत्रजातीनां नवषट् चतुरंगुलम् ॥

दतुवन का अभिमंत्रण करने का यह मन्त्र है।

आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशु वसूनि च।
ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां च तन्नो देहि वनस्पते ॥

दन्तधावन पूर्व अथवा पूर्वोत्तर मुख होकर करना चाहिये।

प्राङ्मुखस्य धृतिः सौख्यं शरीरारोग्यमेव च।
दक्षिणेन तथा कष्टं पश्चिमेन पराजयः॥
उत्तरेण गवां नाशः स्त्रीणां परिजनस्य च।
पूर्वोत्तरे तु दिग्भागे सर्वान्कामानवाप्नुयात ॥

दन्तधावन करने के बाद १२ कुल्ला करे।

"पश्चाद् द्वादश गण्डूषैर्विदध्याद् दन्तधावनम्"

गंगाजी में दातौन निसिद्ध है।

"न दन्तधावनं कुर्याद् गंगा गर्भे विचक्षणः"

मुख प्रक्षालन के पश्चात् स्नान करना चाहिये—

स्नान—

अस्नात्वा नाचरेत् कर्म जपहोमादि किञ्चन्।
लालास्वेद समाकीर्णः शयनादुत्थितः पुमान् ॥

शयन से उठकर लार-स्वेद आदि से युक्त अपवित्र पुरुष जप होम आदि क्रिया नक रे ।

अत्यन्त मलिनः कायो नवच्छिद्रसमन्वितः ।
स्रवत्येव दिवा रात्रौ प्रातः स्नानविशोधयेत् ॥

शरीर अत्यन्त मैला है और ९ छिद्रों से युक्त है । उससे रात दिन मल बहता है अतः प्रातः स्नान द्वारा उसे शुद्ध करे ।

इस वाक्य से प्रातः स्नान की विशेष महिमा है । स्नान किस स्थान पर किया जाय ।

निपानादुद्धृतं पुण्यं ततः प्रस्रवणोदकम् ।
ततोऽपि सारसं पुण्यं ततो नादेयमुच्यते ॥
तीर्थतोयं ततः पुण्यं गंगातोयं ततोऽधिकम् ।

कूपजल, झरना, तालाब, नदी, तीर्थ, गंगाजल ये क्रम से उत्तरोत्तर श्रेष्ठ माने गये हैं । समुद्र स्नान तो सर्वश्रेष्ठ माना ही जाता है ।

जन्मान्तर सहस्रेण यत्पापं कुरुते नरः ।
मुच्यते सर्व पापेभ्यः स्नात्वा क्षीरार्णवे सुकृत ॥

स्नान करने के समय इन श्लोकों का पाठ करें ।

नन्दिनी नलिनी सीता मालती च महापगा ।
विष्णु पादाग्रसम्भूता गंगात्रिपथ गामिनी ॥

भागीरथी भोगवती जाह्नवी त्रिजटेश्वरी ।
द्वादशैतानि नामानि यत्र यत्र जलाशये ।
स्नानोद्यतः सदा कुर्यात्तत्र तत्र वसाम्यहम् ॥

अस्वस्थ होने पर वस्त्र से शरीर पोछने से भी स्नान समझा जाता है ।

आशिरस्कंभवेत् स्नानं स्नानाशक्तौतु कर्मिणाम् ।
आर्द्रेण वाससा वापि मार्जनं दैहिकं विदुः ॥

स्नान से पहले तैल मालिश की प्रशंसा आयुर्वेद में की गई है ।

अभ्यंगमाचरेन्नित्यं स जराश्रम-वातहा ।
शिरसि श्रवणादिकेषु तं विशेषेण शीलयेत ॥

प्रातः स्नान व्रत श्राद्ध द्वादशी और ग्रहण में तेल लगाना निषिद्ध है ।

प्रातःस्नाने व्रते श्राद्धे द्वादश्यां ग्रहणे तथा ।
मद्यलेपसमं तैलं तस्मात्तैलं विवर्जयेत् ॥

स्नान संकल्प—

ॐ अद्य आत्मनः कायिक वाचिक मानसिक कृतकर्म दोषपरिहार द्वारा श्रीपरमेश्वरः प्रीतये प्रातः स्नानमहं करिष्ये ।

इस तरह संकल्प कर मृत्तिका लेकर शरीर में लगावे जिसका मंत्र यह है ।

अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुकांते वसुन्धरे।
मृत्तिके हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम् ॥

इसके बाद जलके अधिपति वरुण एवं गंगाजी की प्रार्थना करे।

वरुण प्रार्थना—

अपामधिपतिस्त्वं च तीर्थेषु वसतिस्तव।
वरुणाय नमस्तुभ्यं स्नानानुज्ञां प्रयच्छ मे ॥

गंगा प्रार्थना—

विष्णुपादाब्ज सम्भूते गंगे त्रिपथगामिनि।
धर्मद्रवेति विख्याते पापं मे हर जाह्नवि ॥
गंगा गंगेति यो ब्रूयाद् योजनानां शतैरपि।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति ॥

इस तरह गंगा की प्रार्थना कर स्नान करे फिर विष्णु भगवान का ध्यान कर स्नानांग तर्पण करे।

कहा भी गया है कि—

स्नानादनन्तरं तावत्तर्पयेत् पितृदेवताः।
उत्तीर्य पीडयेद्वस्त्रं संध्याकर्मततः परम् ॥

स्नानांग तर्पण—

कनिष्ठदेशिन्यंगुष्ठं मूलान्यग्रं करस्य च।

प्रजापति पितृब्रह्मदेवतीर्थान्यनुक्रमात् ॥

कनिष्ठा का मूल प्रजापति तीर्थ, तर्जनी का मूल पितृतीर्थ, अंगुष्ठका मूल ब्रह्म तीर्थ तथा अङ्गुलियों के अग्रभागको देवतीर्थ कहते हैं।

तर्पण तिल और कुशा से करे। क्योंकि—

"विना तिलैश्च दर्भैश्च पितृणां नोपतिष्ठति"

पवित्री धारण कर हाथों के अग्रभाग से देवताओं को अक्षत के साथ एक-एक अंजुलि जल दे।

ओं ब्रह्मादयोदेवास्तृप्यन्ताम्। ओं भूर्देवास्तृ०। ओं भुवर्देवास्तृ०। ओं स्वर्देवास्तृ०। ओं भूर्भुवः स्वर्देवास्तृ०। ओं मरीच्यादि ऋषयस्तृ०।

उत्तर मुख करके जनेऊ को गले में माला की तरह करके प्रजापति तीर्थ से यव के साथ दो दो अञ्जलि जल दे।

ओं सनकादि मनुष्यास्तृप्यन्ताम्। ओं भूर्ऋ-षयस्तृ०। ओं भूर्भुवः स्वः ऋषयस्तृ०।

दक्षिणमुख अपसव्य होकर काले तिलके साथ मोटक (मोड़े हुए कुश) लेकर पीतृतीर्थ से ३ अञ्जलि जल दे।

ओं कव्यवाडवादयो देवपितरस्तृप्यन्ताम्। ओं भूः

पितरस्तृ० । ओं भुवः पितरस्तृ० । ओं स्वः पित-
रस्तृ० । ओं भूर्भुवः स्वः पितरस्तृ० ।

इसके बाद सव्य हो आचमन करके यक्ष्मतर्पण करे—

ओं यन्मया दूषितं तोयं शारीरमलसंभवात् ।
तस्य पापस्य शुद्ध्यर्थं यक्ष्मैतत्ते तिलोदकम् ॥

यह तिलाञ्जलि जल से बाहर दे ।

ओं लता गुल्मेषु वृक्षेषु पितरो ये व्यवस्थिताः ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मयोत्सृष्टः शिखोदकैः ॥

इस मन्त्र से शिखा निचोड़कर जल बाहर गिराये । इसके बाद वस्त्र बदल कर सन्ध्योपासन करे ।

"सम्यग् ध्यायन्ति परमात्मानं यस्यां सा सन्ध्या"

'अहरहः 'संध्यामुपासीत' इस श्रुति के अनुसार यह नित्यकर्म है । इसके अनुष्ठान से दैनन्दिन विघ्नों की निवृत्ति होती है । संध्या न करने से पुरुष की शास्त्र में बड़ी निन्दा की गई ।

"सन्ध्याहीनोऽशुचिर्नित्यमनर्हः सर्वकर्मसु ।
यदन्यत्कुरुते कर्म न तस्य फलभाग् भवेत् ॥

सन्ध्या येन न विज्ञाता सन्ध्या येनानुपासिता ।
जीवमानो भवेच्छूद्रो मृतःश्वा चाभिजायते ॥"

इसीलिये आचार्यों ने इसे अशौच में भी करने को कहा है ।

"सूतके मृतके कुर्यात् प्राणायाममसंत्रकम् ।
तथा मार्जनमंत्रास्तु मनसोच्चार्य मार्ययेत् ॥"

सन्ध्याकाल के विषय में महर्षियों ने कहा है—

"उदयास्तमयादूर्ध्वं यावत् स्याद्घटिकात्रयम् ।
तावत् सन्ध्यामुपासीत प्रायश्चित्तं ततः परम् ॥"

प्रायश्चित के विषय में शास्त्रों का यह निर्णय है ।

सन्ध्याकालेत्वतिक्रांते स्नात्वाऽऽचम्य यथाविधि ।
जपेदष्टशतं देवी ततः सन्ध्यां समाचरेत् ॥

ब्राह्मी वैष्णवी और रौद्री इन तीनों ब्रह्मशक्तियों के साथ सन्ध्योपासन से नित्य सम्बन्धस्थापन द्वारा अनायास ही सन्ध्योपासक की आयु, शक्ति और आध्यात्मिक उन्नति होती है ।

अतः द्विजातिमात्र का परम कर्तव्य है कि वह शास्त्रों की आज्ञा की अवहेलना न करे ।

अथ

॥ सन्ध्योपासन-प्रयोगः ॥

वस्त्र—

सन्ध्यादि पुण्य कर्मों में वस्त्र धारण प्रकार।

स्वयं धौतेन कर्तव्याः क्रिया धर्म्या विपश्चिता।
नतु नेजकधौतेन ना हतेन न कुत्र चित् ॥

शिखा बन्धन मंत्र—

चिद्रूपिणि महामाये दिव्य तेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजो वृद्धिं कुरुष्व मे ॥

इस मन्त्र से शिखा बाँधे शिखा न हो तो चोटी स्पर्श करे—

यज्ञोपवीत धारण मंत्र—

ओं यज्ञोपवीतमितिमंत्रस्य परमेष्ठी ऋषिः लिंगोक्ता देवता त्रिष्टुप्छन्दः यज्ञोपवीत धारणे विनियोगः।
ओं यज्ञोपवितं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रम्,
यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

ओं त्र्यायुषं जमदग्नेः ओं कश्यपस्य त्र्यायुषम् ओं यद्देवेषु त्र्यायुषम् ओं तन्नोऽस्तुत्र्यायुषम्।

इस मन्त्र से चन्दन भस्म या मृत्तिका मस्तक ग्रीवा बाहु और कंठ में लगाकर।

ओं अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

इस मन्त्र से पवित्र होकर गायत्री मन्त्र से शिखा बाँधकर संकल्प करे।

अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय प्रहरार्द्धे श्री श्वेतवाराह कल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैक देशान्तर्गते कलियुगे कलिप्रथम चरणे पुण्यक्षेत्रे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुक वासरे अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकशर्माहम् (प्रातः, मध्याह्न सायं वा) संध्योपासनं करिष्ये।

जल को हाथ में लेकर निम्नलिखित विनियोग को पढ़कर जल छोड़े।

ओं पृथ्वीतिमन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः॥

ओं पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

आसन का स्पर्श करके नीचे लिखे श्लोकों को पढ़कर जल छिड़के ।

ओं ऋतञ्चेति अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दोभाववृतो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः

यह आचमन का विनियोग है और नीचे आचमन का मन्त्र है।

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभिद्धात्तपसोऽध्यजायत । ततो रात्र्यजायत ततः समद्रो अर्णवः ॥ समुद्रादर्णवादधि सम्वत्सरो अजायत । अहोरात्राणिविदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥ सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत । दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः ॥

अपनी रक्षा के लिये हाथ में जल लेकर ॐ कार सहित गायत्री मंत्र पढ़कर शरीर के चारो तरफ घुमाकर छोड़ दे ।

फिर जल हाथ में लेकर प्राणायाम के विनियोग के मन्त्र पढ़कर जल भूमि पर छोड़े ।

ओं कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लोवर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः ॥ १ ॥ ओं सप्तव्याहृतीनां प्रजापतिऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृह

तीपंक्ति त्रिष्टुब्जगत्यश्छदांसि अग्निवाय्वादित्यबृहस्पतिवरुणेन्द्रविश्वेदेवा देवता अनादिष्ट प्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः ॥ २ ॥ ओं गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता अग्निर्मुखमुपनयने प्राणायामे विनियोगः ॥ ३ ॥ ओं शिरसः प्रजापतिऋषिस्त्रिपदा गायत्री छन्दो ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवता यजुः प्राणायामे विनियोगः ॥ ४ ॥

प्राणायाम की विधि—

वायु को ग्रहण करनेवाले प्राणायाम का नाम पूरक है। इसमें नासिका के दाहिने छिद्र को दाहिने अँगुठा से बन्दकर शंख चक्र गदा पद्मधारी श्याम-स्वरूप भगवान् का नाभि में ध्यान करे। प्राणायाम के मन्त्र को तीन बार पढ़ते-पढ़ते नासिका के बायें छिद्र से श्वास खींचता जाय। वायु को स्थिर करनेवाले प्राणायाम का नाम कुम्भक है। इस कुम्भक में कमल के आसन पर बैठे हुए रक्तवर्ण चतुर्मुख ब्रह्माजी का हृदय में ध्यान धरे। इसमें मध्यमा और अनामिका से बायें छिद्र को दबाये और प्रथम की भाँति प्राणायाम के मन्त्र को तीन बार पढ़े। वायु को त्यागने के समय प्राणायाम को रेचक कहते हैं। इसमें श्वेत वर्ण शिवजी का अपने मस्तक में ध्यान करे और प्रथम की भाँति प्राणायाम के मन्त्र को पढ़ते-पढ़ते श्वास को नासिका के दाहिने छिद्र से धीरे-धीरे छोड़ता जाय। यही प्राणायाम की विधि है।

प्राणायाम का मन्त्र—

ओं भूः ओं भुवः ओं स्वः ओं महः ओं जनः ओं तपः ओं सत्यम् । ओं तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात। ओं आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् ।

नीचे लिखे मन्त्र से हाथ में जल लेकर प्रातःकाल की सन्ध्या के प्राणायाम के बाद आचमन का विनियोग करे ।

ॐ सूर्यश्चमेति ब्रह्मा ऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्यो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।

नीचे लिखे मन्त्र द्वारा आचमन करे ।

ओं सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्तां यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिद्दुरितं मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ।

प्रातःकाल के आचमन की तरह मध्यान्हकालका भी विनियोग और आचमन उत्तराभिमुख करे जिसके मन्त्र निम्नांकित हैं ।

ओं आपः पुनन्त्विति विष्णुऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।

ओं आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवी पूता पुनातु माम्ः पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम् । यदुच्छिष्टमभोज्यश्चयद्वादुश्चरितं मम । सुर्वं पुनन्तु मामापोऽसतां च प्रतिग्रह ओं स्वाहा ।

इसी भाँति सायंकाल में भी पश्चिम मुख बैठकर सम्पूर्ण कर्म प्रातःकाल की तरह करे । प्राणायाम के पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र से पहिले विनियोग करके आचमन करे ।

ओं अग्निश्चमेति रुद्र ऋषिःप्रकृतिश्छन्दोऽग्निर्देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।

ओं अग्निश्चमामन्युश्चमन्युपतयश्चमन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्तां यदह्नापापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेणशिश्ना अहस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिद्दुरितं मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ।

"आपोहिष्ठा" इत्यादि मन्त्र के नव भाग हैं । प्रथम बायें हाथ में जल लेकर विनियोग करे । फिर सात बार जल सिरपर छिड़के आठवीं बार पृथ्वीमें छिड़ककर नवें बार फिर शिरपर जल छिड़के

ओं आपोहिष्ठेत्यादि ऋचस्य सिन्धुद्वीप ऋषि गायत्री छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः ।

इस मन्त्र से विनियोग करके फिर नीचे लिखे मन्त्र से मार्जन करे।

ओं आपोहिष्ठामयोभुवः ॥ १ ॥ ओं तानऊर्जेदधातन ॥ २ ॥ ओं महेरणाय चक्षसे ॥ ३ ॥ ओं यो वः शिवतमोरसः ॥ ४ ॥ ओं तस्य भाजयतेहनः ॥ ५ ॥ ओं उशतीरिव मातरः ॥ ६ ॥ ओं तस्माअरंगमामवः ॥७॥ ओं यस्य क्षयाय जिन्वथः ॥ ८ ॥ ओं आपो जन यथाचनः ॥ ९ ॥

फिर हाथ में जल लेकर पहले विनियोग के मन्त्र को पढ़कर जल को पृथ्वी पर छोड़ दे।

ॐ द्रुपदादिवेति कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता सौत्रामण्यवभृथे विनियोगः।

पश्चात् जल लेकर निम्नलिखित मन्त्र को पढ़कर जल को शिरपर छिड़के।

ओं द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव। पतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तुमैनसः।

नीचे लिखे मन्त्र से अघमर्षण का विनियोग करे।

ओं अघमर्षण सूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववृतोदेवता पापपुरुषनिरसने विनियोगः।

फिर एकही श्वाँस में तीन या एक बार नीचे लिखे मन्त्र पढ़कर यह स्मरण करे कि मेरे बायें कुक्षि में पाप-पुरुष का बास है उसको नासिका के दाहिने छिद्र की राह से मन्त्ररूपी अग्निसे भस्म किया। यह स्मरण कर बायीं नासिका के छिद्र से श्वाँस निकाल जल को बायीं तरफ डाल दे और उसे न देखे।

ओं ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः।

इसके बाद जलको हाथमें लेकर नीचे लिखे मन्त्रको पढ़कर पृथ्वी में जल गिरा दे।

ओं अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

फिर निम्नलिखित मन्त्र को पढ़कर तीन बार आचमन करके हाथ धो डाले।

ओं अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः। त्वं यज्ञस्त्वंषट्कारः आपो ज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्॥

इस मन्त्र से आचमन के अनन्तर सूर्य भगवान् की तरफ मुख करके पुष्प-आदि चन्दन से मिश्रित जल लेकर गायत्री मंत्र को पढ़ते हुए तीन बार अर्घ्य दे।

इसके पश्चात् सूर्य-उपस्थान (स्तुति परक) मन्त्रों का विनियोग नीचे लिखे मंत्रों को पढ़ता हुआ करे।

ओं उद्वयमित्यस्य हिरण्यस्तूप ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः। ओं उदुत्यमिति प्रस्कण्व ऋषिर्गायत्रीछन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः। ओं चित्रमित्यस्य कौत्स ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्योदेवता सूर्योपस्थाने विनियोगः। ओं तच्चक्षुरिति दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिरक्षरातीतपुरउष्णिक्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥

फिर खड़ा होकर नीचे लिखे मन्त्रों को पढ़ते हुए सूर्य का उपस्थान (स्तुति) दोनों हाथ उठाकर करे।

ओं उद्वयं तमसस्परिस्वः पश्यन्त उत्तरं देवं देवत्रासूर्यमगन्मज्योतिरुत्तमम् ॥ १ ॥ ओं उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवःदृशे विश्वायसूर्यम् ।२। ओं चित्रं देवानामुदगादनीकं तच्चक्षुर्मित्रस्यव्वरुण-स्याग्ने आप्राद्यावा पृथिवी अन्तरिक्ष ँ सूर्य

आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥ ३ ॥ ओं तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ शृणु याम शरदः शतम्प्रब्रवामशरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥ ४ ॥

सूर्य-उपस्थान के पश्चात् आसन पर बैठकर फिर निम्न-लिखित मन्त्रों को पढ़कर अंगन्यास करे। हृदय, शिर, शिखा दोनों नेत्रों का क्रमशः स्पर्श करते हुए 'अस्त्राय फट्' उच्चारण कर चारो तरफ चुटकी बजादे।

ओं हृदयाय नमः। ओंभूःशिरसेस्वाहा। ओंभुवः शिखायै वषट्। ओं स्वःकवचाय हुम्। ओंभूर्भुवः स्वः नत्राभ्यां वौषट्। ओं भूर्भुवःस्वः अस्त्रायफट् ॥

सूर्योपस्थान के बाद निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा गायत्रीजप के लिये विनियोग करे।

ओं कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णो जपे विनियोगः ॥ १ ॥ त्रिव्याहृतीनां प्रजापति ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांस्यग्निवा-य्वादित्यादेवता जपे विनियोगः ॥२॥ ओं गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः ॥ ३ ॥

इसके अनन्तर हाथ जोड़कर नीचे लिखे दोनों श्लोकों को पढ़कर श्री गायत्री देवी का ध्यान करे।

ओं श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा।
श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलङ्कारैश्च भूषिता ॥ १ ॥
आदित्यमण्डलस्था च ब्रह्मलोकं गताथवा।
अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगताशुभा ॥ २ ॥

फिर हाथ में जल लेकर नीचे लिखे विनियोग को पढ़कर गायत्री देवी का आवाहन करे और जल पृथ्वी पर छोड़ दे।

ओं तेजोऽसीतिदेवा ऋषयः शुक्रं दैवतं गायत्री छन्दो गायत्र्यावायने विनियोगः।

फिर नीचे लिखे मंत्र से गायत्रीदेवी का आवाहन करे।

ओं तेजोऽसिशुक्रमस्यमृतमसिधामनामसि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवय जनमसि। ओंगायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पाद्यपदसि नहि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय परोरजसेऽसावदोमाप्रापत् ॥

आवाहन के बाद प्रातः मध्यान्ह और सायंकाल सूर्य की ओर मुखकर एकाग्रचित होकर शुद्ध मन से एक सौ आठ या एक हजार गायत्री मंत्र का जप करे।

जपके पूर्व इस अवसर के लिये निर्दिष्ट २४ मुद्राओं को

करे। जप की समाप्ति करके ८ मुद्राओं को करे। गायत्री जपके प्रारम्भ और अन्त में इन मुद्राओं को अवश्य करना चाहिये।

जपके पूर्व की २४ मुद्रायें—

सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा।
द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुष्पञ्चमुखं तथा॥
षण्मुखोऽधोमुखं चैव व्यापकाञ्जलिकं तथा।
शकटं यमपाशं च ग्रन्थितं चोन्मुखोन्मुखम्॥
प्रलम्बं मुष्टिकं चैव मत्स्यः कूर्मोवराहकम्।
सिंहाक्रान्तं महा क्रांतम्मुद्गरं पल्लवं तथा।
एता मुद्राश्चतुर्विंशज्जपादौ परिकीर्तिताः॥

जप के बाद की अष्ट मुद्रा—

सुरभिर्ज्ञानवैराग्ये योनिः शंखोऽथ पङ्कजम्।
लिंग निर्वाण मुद्राष्टौ जपान्ते च प्रदर्शयेत्॥

(गायत्री ब्राह्मण के लिये)

ओं भूर्भुवः स्वः तत्सवितुवरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

(त्रिष्टुप क्षत्रियों के लिये)

ओं देव सेवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं

भगाय। दिव्योगन्धर्वः केतपूः चेतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु।

(जगती वैश्य के लिये)

ओं विश्वारूपाणि प्रतिमुञ्चते कविःप्रसाविद्भद्रं द्विपदे चतुष्पदे। विनाकमरव्यत्सविता वरेण्योऽनु प्रयाणमुषसो विराजति॥

अथवा तीनों वर्ण गायत्री का ही जप करें।

जप समाप्त करके निचे लिखे मंत्र से प्रदक्षिणा करे।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे॥

फिर हाथ में जल लेकर नीचे लिखा श्लोक पढ़कर विसर्जन करे।

उत्तरे शिखरे जाता भूम्यां पर्वतवासिनि।
मातस्तु वरदे देवि गच्छ देवि यथासुखम्॥

पूर्वाह्ण कृत्य के अनन्तर मध्याह्न कृत्य करने की विधि है। इसमें भोजन मुख्य है। गृहस्थही सकल जीवो का आश्रय है।

'भुविभूतोपकाराय गृही सर्वाश्रयो यतः'

अतः भोजन से पहले सबको भोजन देकर तब स्वयं भोजन करे। इसलिये होम, वैश्वदेव, बलि, अतिथि सेवन, नित्यश्राद्ध

गोग्रास और पञ्चमहायज्ञ के बाद भोजन करने की आज्ञा शास्त्र में वर्णित है।

पञ्च सूना गृहस्थस्य चुल्ली पेषण्युपस्करा।
कण्डनी चोदकुम्भश्च वध्यते यास्तु वाहयन् ॥
तासां क्रमेण सर्वासां निष्कृत्यर्थं महर्षिभिः।
पञ्च क्लृप्ता महायज्ञाः प्रत्यहं गृहमेधिनाम् ॥
अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः, पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमो दैवे, बलिर्भौतो, नृयज्ञोऽतिथि पूजनम् ॥

चूल्हा, चक्की, झाड़, ओखली और जल के स्थान में जो हिंसा होती है उसकी निवृत्ति के लिये ब्रह्मयज्ञ (वेद, वेदांग, पुराण आदि का पाठ,) पितृयज्ञ (श्राद्ध और तर्पण,) देवयज्ञ (देव पूजन और हवन,) भूतयज्ञ (बलिवैश्वदेव) और मनुष्य यज्ञ (अतिथि सत्कार) नित्य करना चाहिये।

वैश्यदेव के समय जो एक बलि पितरों को दी जाती है। उसे ही पितृ-यज्ञ, सनकादि ऋषियों को जो एक बलि देते हैं उसे मनुष्य-यज्ञ, भूतों को जो बलि दी जाती है उसे भूत-यज्ञ देवताओं की आहुतियों को देव-यज्ञ और गायत्री जप ब्रह्मयज्ञ मानकर पंच यज्ञ पूरा हो जाता है तथापि मुख्य पक्ष के अनुसार सभी यज्ञों का वर्णन किया है।

अथ देवर्षिपितृ तर्पणविधिः

तर्पणन्तु शुचिः कुर्यात् प्रत्यहं स्नातको द्विजः ।
देवेभ्यश्च, ऋषिभ्यश्च, पितृभ्यश्च यथाक्रमम् ॥

तर्पण भी मनुष्यों के दैनिक कृत्यों में एक है । इसकी आवश्यक सामग्रियों में तिल और कुश प्रमुख हैं ।

"विना तिलैश्च दर्भैश्च पितॄणां नोपतिष्ठति ।"

सन्ध्या से निवृत्त हो इस कृत्य को करना चाहिये ।

संकल्पः—

ॐ अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय प्रहरार्द्धे श्रीश्वेत वाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे कलियुगे कलिप्रथमचरणे पुण्यक्षेत्रे अमुकवासरेऽमुक गोत्रोऽमुक नामाहं देवर्षिपितृतर्पणं करिष्ये ।

नीचे के मन्त्रों से आवाहन करे ।

ब्रह्मादयः सुराः सर्वे ऋषयः सनकादयः ।
आगच्छन्तु महाभागा ब्रह्माण्डोदरवर्तिनः ॥

अथवा ।

ओं विश्वेदेवाऽआगत शृणुताम इमँ हवम् । इदं बर्हिनिषीदत ॥ १ ॥

ओं विश्वेदेवाःशृणुतेमँ हवम्मे येऽअन्तरिक्षेयऽउपद्यविष्ठ । येऽअग्निजिह्वाऽउतवा यजत्राऽआसद्यास्मिन्बर्हिषि मादयध्वम् ॥ २ ॥

ओं आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः । ये तपणेऽत्रविहिताः सावधाना भवन्तु ते ॥ ३ ॥

पूर्वाभिमुख सव्य हाथों में पवित्री कटि में मोटक (मोड़े कुशों को) धारण कर पूर्वाग्र तीन कुश लेकर अक्षत या यव के साथ देवतीर्थ (अंगुलियों के अग्रभाग) से एक-एक अञ्जलि जल दें।

देवतर्पण ।

ओं ब्रह्मातृप्यताम् ओं विष्णुस्तृप्यताम् ओं रुद्रास्तृप्यान्ताम् ओं प्रजापतिस्तृप्यताम् ओं देवास्तृप्यन्ताम् ओं छन्दांसितृप्यन्ताम् ओ वेदास्तृप्यन्ताम् ओं ऋषय स्तृप्यन्ताम् ओं पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम् ओं गन्धर्वास्तृप्यन्ताम् ओं इतराचार्यास्तृप्यन्ताम् ओं संवत्सरः

सावयवस्तृप्यताम् ओं देव्यस्तृप्यन्ताम् ओं अप्सरसस्तृप्यन्ताम् ओं देवानुगास्तृप्यन्ताम् ओं नागास्तृप्यन्ताम् ओं सागरास्तृप्यन्ताम् ओं पर्वतास्तृप्यन्ताम् ओं सरितस्तृप्यन्ताम् ओं मनुष्यास्तृप्यन्ताम् ओं यक्षास्तृप्यन्ताम् ओं रक्षांसितृप्यन्ताम् ओं पिशाचास्तृप्यन्ताम् ओं सुपर्णास्तृप्यन्ताम् ओं भूतानितृप्यन्ताम् ओं पशवस्तृप्यन्ताम् ओं वनस्पतयस्तृप्यन्ताम् । ओं ओषधयस्तृप्यन्ताम् ओं भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यन्ताम्॥

ऋषितर्पण—

इन ऋषियों को भी उसी प्रकार जल देना चाहिये ।

ओं मरीचिस्तृप्यताम् ओं अत्रिस्तृप्यताम् ओं अंगिरास्तृप्यताम् ओं पुलस्त्यस्तृप्यताम् ओं पुलहस्तृप्यताम् ओं क्रतुस्तृप्यताम् ओं प्रचेतास्तृप्यताम् ओं वसिष्ठस्तृप्यताम् ओं भृगुस्तृप्यताम् ओं नारदस्तृप्यताम् ।

उत्तराभिमुख यज्ञोपवीत को कण्ठी कर प्रजापति (ऋषि) तीर्थ कनिष्ठा के पास और कुश के मध्य से यव अक्षत सहित दो दो अञ्जलि जल दे ।

ओं कपिलादयश्च ये सर्वे ऋषयः सनकादयः ।
आगच्छन्तु महाभागा ब्रह्माण्डोदरवर्तिनः ॥
ओं सनकस्तृप्यताम् । ओंसनन्दनस्तृप्यताम् । ओं सनातनस्तृप्यताम् । ओंकपिलस्तृप्यताम् । ओं आसुरिस्तृप्यताम् ॥ ओं वोढुस्तृप्यताम् । ओं पञ्चशिखस्तृप्यताम् ।

पितृतर्पण—

दक्षिणाभिमुख बायाँ घुटना मोड़ कर, अपसव्य हो मोटक (दोहरा कुश) लेकर पितृ तीर्थ (तर्जनी के मूल) से तीन तीन अञ्जलि तिल मिश्रित जल दे ।

ओं उशन्तस्त्वा निधीमह्युशन्तः समिधी महि उशन्नुशतऽआवहपितृन् हविषेऽअत्तवे ॥ १ ॥ ॐ आयन्तुनः पितर सोम्यासो ऽग्निष्वात्ता पथिभिर्देवयानैः । अस्मिन्यज्ञे स्वधयामदन्तोऽधि ब्रुवन्तुतेऽवन्त्वस्मान् ॥ २ ॥

ॐकव्यवाट् तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मैस्वधा ॥३॥
ॐ अनलस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मैस्वधा ३ । ॐ सोमस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मैस्वधा ३ । ॐ यम-

स्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३। ओं अर्यमा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मैस्वधा ३। ओ अग्निष्वात्ता स्तृप्यन्तामिदं तिलोदकं तेभ्यः स्वधा ३। ओं सोमपास्तृप्यन्तामिदं तिलोदकं तेभ्यः स्वधा ३। ओं बर्हिषदस्तृप्यन्तामिदं तिलोदकं तेभ्यः स्वधा ३।

चौदह यमों को भी इसी प्रकार तीन-तीन अञ्जलि जल देवे।

ओं यमाय नमः। ओं धर्मराजाय नमः। ओं मृत्यवे नमः। ओं अन्तकाय नमः। ओं वैवस्वताय नमः। ओं कालाय नमः। ओं सर्व भूतक्षयाय नमः। ओं औदुम्बराय नमः। ओं दध्नाय नमः। ओं नीलाय नमः। ओं परमेष्ठिने नमः। ओं वृकोदराय नमः। ओं चित्राय नमः। ओं चित्रगुप्ताय नमः।

नीचे लिखे मन्त्रोंसे अथवा केवल वाक्योंसे ही जल दीजिये।

ओं उदीरतामवरऽउत्परासऽउन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुंयऽईयुरवृकाऽ ऋतज्ञास्तेनोऽवन्तु पितरो हवेषु ओं अमुकगोत्रोऽस्मत्पिता अमुकशर्म्मा वसु रूपस्तृप्यत मिदं जलं तस्मै स्वधा। १॥ ओं अंगिरसो नः पितरो नवग्वाऽअथर्व्वाणोभृगवः

सोम्यासः । तेषांꣳवय ँ सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम । ओं अद्यामुकगोत्रोऽस्मत्पिता अमुकशर्म्मा वसुरूपस्तृप्यतामिदजलंतस्मैस्वधा २ ओं आयन्तुनःपितरःसोम्यासोऽग्निष्वात्ता पथिभिर्द्देवयानैः । अस्मिन्यज्ञेस्वधयामदन्तोधिब्रुवन्तुतेऽवन्त्वस्मान् । ॐ अद्यामुकगोत्रोऽस्मत्पिता अमुकशर्म्मावसुरूपस्तृप्यतामिदंजलंतस्मैस्वधा ३

ओं ऊर्ज्जं वहन्तिरमृतं घृतं पयः कीलालम्वरिस्रुतम् । स्वधास्थ तर्पयतमेपितॄन् । ओं अद्यामुकगोत्रोऽस्मपितामहोऽमुकशर्म्मारुद्ररूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा ॥ १ ॥ ओं पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वाधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहभ्यः स्वधायिभ्यःस्वधानमःअक्षन्नपितरोऽमीमदन्तपीतरोऽतीतृपन्तपितरः पितरःशुन्धध्वम् । ओं अद्यामुक गोत्रोऽस्मत्पितामहोऽमुकशर्म्मारुद्ररूपस्तृप्यतामिदंजलं तस्मैस्वधा॥२॥ओंयेचेह पितरोयेचनेहयांश्च विद्मयांऽउचनप्रविद्म । त्वंवेत्थयतितेजातवेदःस्वधाभिर्यज्ञ ँ सकृतं जुषस्व । ओं अद्यामुकगोत्रोऽस्मत्पितामहोऽमुकशर्म्मारुद्रस्वरूपस्तृप्यतामिदंजलंतस्मैस्वधा॥३॥

ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः। ॐ अद्यामुकगोत्रोऽस्मत्प्रपितामहोऽमुक शर्म्मा आदित्यरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा॥१॥ ॐ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता। ॐ अद्यामुकगोत्रोऽस्मत्प्रपितामहोऽमुकशर्म्मा आदित्यरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा।२। ॐ मधु, मान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्ग्गावो भवन्तु नः। ॐ अद्यामुकगोत्रोऽस्मत्प्रपितमहोऽमुक शर्म्मा आदित्यरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा॥३॥

ॐ तृप्यध्वं तृप्यध्वम् इससे एक एक अंजलि जल और दे।

ॐ अमुक गोत्रास्मन्माता अमुकी देवी गायत्री स्वरूपा तस्यै स्वधा। ॐ अमुकगोत्रास्मत्पितामही अमुकी देवी सावित्रीस्वरूपा तस्यै स्वधा। ॐ अमुकगोत्रास्मत्प्रपितामही अमुकी देवी सरस्वतीस्वरूपा तस्यै स्वधा।

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै। नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो द्धेष्मैतद्व

पितरोऽव्यासः। ॐ अद्यामुकगोत्रोऽस्मत्मातामहोऽमुकशर्मावसुरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा। ॐ अद्यामुक गोत्रोऽस्मत्प्रमातामहोऽमुकशर्मा रुद्ररूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा। ॐ अमुकगोत्रोऽस्मत्वृद्धप्रमातामहोऽमुकशर्म्माआदित्यरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा।

इसी प्रकार मातामही आदि को जल देना चाहिये।

ॐ अमुकगोत्रास्मन्मातामही अमुकी देवी गायत्री स्वरूपा तृप्यतामिदं जलं तस्यैस्वधा ॐ अमुकगोत्रास्मत्प्रमातामही अमुकादेवी सावित्री स्वरूपा-तृप्यतामिदं जलं तस्यैस्वधा। ॐ अमुकगोत्रास्मद्वृद्धप्रमातामही अमुको देवी सरस्वती स्वरूपा तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा।

इसी तरह पितृव्य (चाचा), मातुल (मामा), भ्राता, श्वशुर, पुत्र, पितृष्वासा (पिता की बहन), स्वासा (बहन), दुहिता (लड़की), श्वश्रू (सास आदि को भी जल देना) इसके बाद इसी तरह नीचे के श्लोकों को पढ़ते हुए जल दीजिये।

ॐ देवासुरास्तथा यक्षा नागा गन्धर्वराक्षसाः ।
पिशाचा गुह्यका सिद्धाः कूष्मांडास्तरवः खगाः ।।
जलेचरा भूनिलया वाय्वाधाराश्च जन्तवः ।। ३ ।।
प्रीतिमेते प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाम्बुनाखिलाः ।
नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः ।।
तेषामाप्यायनायैतद्दीयते सलिलं मया ।
येऽबान्धवा बान्धवाश्च येऽन्यजन्मनि बान्धवाः ।।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति ।
ये मे कुले लुप्तपिंडाः पुत्रदारविवर्जिताः ।।
तेषां हि दत्तमक्षय्यमिदमस्तु तिलोदकम् ।
ॐ ब्रह्मस्तम्ब पर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः ।
तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृ-मातामहादयः ।।
अतीत कुल कोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम् ।
आ ब्रह्म भुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम् ।।

फिर जल के बाहर बाँयें तरफ वस्त्र निचोड़ कर जल दे ।

येचास्माकं कुलेजाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः ।
ते तृप्यन्तु मयादत्तैर्वस्त्रनिष्पीडनोदकैः ।।

सव्य हो आचमन कर नीचे लिखे मन्त्रों से अक्षत और जल-पुष्प से अर्घ्य दे।

ॐनमोविवस्वते ब्रह्मन् भास्वते विष्णुतेजसे। जगत्सवित्रे शुचये नमस्ते कर्मदायिने। सूर्यायनमः

अथवा—

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते। अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर। सूर्य्यायनमः। ॐब्रह्मणे नमः। ॐविष्णवे नमः ॐ रुद्राय नमः। ॐसवित्रे नमः। ॐमित्राय नमः। ॐ वरुणाय नमः।

वैय्याघ्रपद गोत्राय सांकृत्य प्रवराय च।
अपुत्राय ददाम्येतद् जलं भीष्माय वर्म्मणे॥

अनेन देवर्षि पितृतर्पण विधिना भगवान् वासुदेवः प्रीयताम् ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु।

॥ इति तर्पण विधि समाप्त॥

———

॥ पार्थिवपूजन विधि ॥

स्नान, संध्योपासनादि के अनन्तर प्रत्येक आस्तिक जन देवपूजन करते हैं। अपनी श्रद्धा के अनुसार दुर्गा, विष्णु, गणपति आदि का लोग पूजन करते हैं। 'नन्दिपुराण' में पार्थिवार्चन की बड़ी महिमा कही गयी है और इसे सब इच्छाओं की पूर्ति का साधक कहा गया है।

आयुष्मान् बलवान् श्रीमान् पुत्रवान् धनवान् सुखी।
वरमिष्टं लभेल्लिगं पार्थिवं यः समर्चयेत् ॥
तस्मात्तु पार्थिवं लिंगं ज्ञेयं सर्वार्थसाधकम् ॥

'देवपुराण' में पार्थिवार्चन का क्रम इस प्रकार कहा गया है—

मृदाहरणं संघट्टं प्रतिष्ठाह्वानमेव च।
स्नपनं पूजनं चैव विसर्जनमतः परम् ॥
हरो महेश्वरश्चैव शूलपाणिः पिनाकधृक्।
पशुपतिः शिवश्चैव महादेव इति क्रमात् ॥

स्नानादि कर शुद्धहृदय हो "ॐ हरायनमः" इस मंत्रसे शुद्ध मृत्तिका लावे और 'ॐ महेश्वराय नमः' इस मंत्रसे उसे साने, बाद में लिंगाकार शिवमूर्त्ति बनाकर "ॐ शूलपाणे इह संप्रतिष्ठतो भव" इस

मंत्रसे उनकी प्रतिष्ठा करे। इसके बाद नीचे लिखा मंत्र पढ़कर ध्यान करे।

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम्। रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीति हस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिल भयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्।

ध्यानके बाद 'ॐ पिनाक धृक् इहागच्छ' इस मंत्र से आवाहन करे और 'ॐ पशुपतये नमः' इससे स्नान करावे। 'ॐ नमः शिवाय' इस मंत्र द्वारा षोडशोपचार से पूजन करे तदनन्तर विसर्जनसे पूर्व निम्नांकित मन्त्रोंका उच्चारण करता हुआ वामावर्त पूजन करना चाहिये—

'ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः' ॐ भवाय जलमूर्तये नमः, ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः, ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः, ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः।

मूर्तयोऽष्टौ शिवस्यैताः पूर्वादिक्रम योगतः ।
आग्नेय्यन्ताः प्रयोज्यास्तु वेद्यां लिंगे शिवं भजेत ।

इसके बाद 'ॐ महादेव क्षमस्व' कहकर संहार मुद्रा प्रदर्शन करता हुआ विसर्जन करे ।

नन्दिपुराण में 'ॐ नमः शिवाय' इस मंत्र की बड़ी महिमा कही गयी ।

गो भू हिरण्य वस्त्रादि बलि पुष्प निवेदने ।
ज्ञेयो नमः शिवायेति मंत्रः सर्वार्थसाधकः ॥
सर्व मंत्राधिकश्चायं ॐ काराद्यः षडक्षरः ।
तन्मंत्रजापी तत्कर्मरतस्तद्गत मानसः ॥
निष्कामो पुरुषो राजन् स रुद्रपदमश्नुते ॥

भविष्य पुराण में सभी को इसका अधिकारी बताया गया है ।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा ।
महापातक संयुक्तो मन्त्रस्यास्य जपे यथा ॥
अधिकारी भवेत्सर्व इति वेदेऽब्रवीच्छिवः ॥

भगवान् शिवको धतूर बिल्वपत्र चढ़ाने की बड़ी महिमा है—और

धत्तूरकैश्च यो लिंगं सकृत्पूजयते नरः ।
स गोदानफलं प्राप्य शिवलोके महीयते ॥

सर्वकामप्रदं बिल्वं दारिद्र्यस्य विनाशनम् ।
बिल्वपत्रात्परं नास्ति येन तुष्यति शंकरः ॥

भगवान् शिव को आम और केला चढ़ाने का विशेष फल कहा गया है—

एकमाम्रफलं पक्वं यः शंभोर्विनिवेदयेत् ।
वर्षाणां अयुतं भोगैः शिवलोके महीयते ॥
एव मोचाफलं पक्वं यः शिवाय निवेदयेत् ।
सर्वभक्ष्य महायोगैः शिवलोके महीयते ॥

शिव के पूजन में मुख वाद्य (बम् बम्) का प्रयोग अवश्य करना चाहिये इससे भगवान् सन्तुष्ट होते हैं—

गन्धधूपनमस्कारैर्मुखवाद्यैश्च सर्वशः ।
यो मामर्चयते तत्र तदा तुष्याम्यहं सदा ॥

पूजन के बाद विसर्जन के अवसर पर संहार मुद्रा को प्रदर्शन करना चाहिये यह पूर्व में कह आये हैं। यहाँ संहार मुद्रा कैसे बनाई जाय, यह बताते हैं।

अधोमुखे वामहस्ते ऊर्ध्वास्यं दक्षहस्तकम् ।
क्षिप्तांगुलीरंगुलीभिः संयुज्य परिवर्तयेत् ॥
प्रोक्ता संहार मुद्रेयम्............॥

॥ इति पार्थिव पूजन विधिः ॥

॥ पंच महायज्ञ ॥

स्नानादि कृत्य के अनन्तर पंचमहायज्ञ करने का विधान है। याज्ञवल्क्य ने इसका निर्देश निम्नलिखित प्रकार से किया है।

बलिकर्म स्वधा होमः स्वाध्यायाऽतिथिसत्क्रिया ।
भूत पित्रामर ब्रह्म मनुष्याणां महामखाः ॥

स्वाध्याय अर्थात् वेदपाठकरना ब्रह्मयज्ञ है, अग्नि में हवन करना देवयज्ञ है, बलि करना भूतयज्ञ है, पितरों को तर्पणादि करना पितृयज्ञ और मनुष्यों (अभ्यागतों-अतिथियों) को देना मनुष्य यज्ञ कहलाता है। ये कार्य लोगों को नित्य करना चाहिये।

ब्रह्मयज्ञ

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवम् ऋत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्। (ऋग्वेद)

अर्थ--मैं सर्वश्रेष्ठ परमात्मा की वंदना करता हूँ, जो सर्व व्यापक है सृष्टियज्ञ के देवता हैं। ऋतुओं में यज्ञ करने वाला, सबका प्रेरक और सब पदार्थों को देने वाला है।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

अर्थ—ईश्वर सत, चित् और आनन्द है। हम उस देव देव जगत्स्रष्टा ईश्वर के तेजोमय स्वरूप का चिन्तन करते हैं वह हमारी बुद्धि को भले कामों में लगावे।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥ ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

अर्थ—वह (ब्रह्म) पूर्ण है। यह (जगत्) पूर्ण है क्योंकि ब्रह्म से जगत् उत्पन्न होता है। वह ब्रह्म प्रलय में जगत को अपने में लीन कर अन्त में विद्यमान रह जाता है ॥ १ ॥

हे सर्वथा परिपूर्ण ब्रह्म! आध्यात्मिक दुःखों (काम, क्रोध लोभ, मोह, ईर्ष्या, असूया राग, द्वेष से उत्पन्न मानसिक दुःख तथा ज्वर पीड़ा से उत्पन्न शारीरिक दुःख। आधिदैविक दुःखों (अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकम्प, अग्निदाह, जलप्लावन, विद्युत्पात आदि से उत्पन्न दुःख) तथा आधिभौतिक दुःखों (साँप बिच्छू, सिंह, व्याघ्र, चोर, डाकू, राजा तथा राजकर्मचारी आदि से उत्पन्न दुःख) की निवृत्ति हो।

ॐ आप्यायन्तु मम अंगानि वाक् प्राणः चक्षुः श्रोत्रम् अथो बलम् इन्द्रियाणि च। सर्वाणि सर्वब्रह्मोपनिषदं मा महं ब्रह्म निराकुर्याम्। मा मा ब्रह्म निराकरोत्। अनिराकरणम् अस्तु।

मनिराकरणं मेऽस्तु। तद् आत्मनि निरते ये उपनिषत्सु धर्माः ते मयि सन्तु।

अर्थ—हे परमात्मन्! मेरे अङ्ग वृद्धि को प्राप्त हों। वाणी नासिका, आँख, कान, त्वक् और सब इन्द्रियाँ वृद्धि को प्राप्त हों। यह जो सर्वरूप उपनिषदों में कहा हुआ ब्रह्म है, मैं उस ब्रह्म को न भूलूँ। न वह मुझे भूले। यह न भूलना परस्पर हो। न भूलना मेरे लिये हो। उस सबके भीतर में निमग्न के लिये, जो धर्म उपनिषदों में कहे गये हैं, वे मुझ में हों।

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः। स्वस्ति नः इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदा। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु। ओम् शान्ति शान्तिः शान्तिः।

अर्थ—हे विद्वानों! हम कानों से सुखदायी वचन को सुनें। हे पूजनीयों! हम आँखों से सुखदायी पदार्थों को देखें। दृढ़ अंगों और शरीरों से युक्त होकर स्तुति करते हुए हम ईश्वरदत्त आयु को मागें। परम ऐश्वर्यवान् इन्द्र हमें सुख दें। सबका

पोषक हमको सुख दें। अटूट तथा अकुण्ठित वज्र वाले ता
हमको सुख दें। बृहस्पति हमको सुख दें।

ॐ वाक् मे मनसि प्रतिष्ठिता। मनो
वाचि प्रतिष्ठितम्। आवि भावीः में एधि
वेदस्य में आणीस्थः। श्रुतं मे मा प्रहासीः। अने
अधीतेन अहोरात्रान् संदधामि ऋतं वदिष्यामि
सत्यं वदिष्यामि। तत् माम् अवतु। तद्वक्तारम्
अवतु। अवतु माम् अवतु वक्तारम्। ओम् शान्तिः
शान्तिः शान्तिः।

अर्थ—हे परमात्मन्! मेरी वाणी मन में प्रतिष्ठित हो।
मेरा मन वाणी में प्रतिष्ठित हो। हे प्रकटस्वरूप! मेरे वाणी और
मनमें प्रकट हो। हे मेरे वाणी और मन तुम दोनों मेरे लिये
वेदविधि को अच्छी तरह कराने वाले बनो। हे अन्तर्यामी
परमात्मन्! मेरा सुना हुआ न भूले। मैं इस पढ़े हुए के साथ
दिन रात गुणता हूँ। मैं अनृत कहूँगा। सत्य कहूँगा। परमात्मा
मेरी रक्षा करे, वह आचार्य की रक्षा करे।

ओम् ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्।
आ राष्ट्रे राजन्यः शूरः इषव्यो अतिव्याधी
महारथो जायताम्। दोग्ध्री धेनुः वोढा अनड्वान्

आशुः सप्तिः पुरन्ध्रिः योषा जिष्णुः रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नः ओषधयः पच्यन्ताम्। योगः क्षेमो नः कल्पताम्॥

अर्थ—हे सबसे बड़े। हमारे देश में ब्राह्मण, वेद आदि समस्त विद्याओं से देदीप्यमान उत्पन्न हों। क्षत्रिय पराक्रमी, शस्त्र, अस्त्र, चलाने में निपुण, शत्रुओं को अत्यन्त पीड़ित करने वाले और हजारों से अकेला युद्ध करने वाले उत्पन्न हों। गौ दूध देनेवाली, बैल बोझा ढोने वाले, घोड़ा शीघ्र चलने वाले और स्त्री विदुषी उत्पन्न हों। प्रत्येक मनुष्य विजय प्राप्त करने का स्वभाव रखने वाला, रथों में बैठने वाला और सभा में प्रवीण उत्पन्न हो। उस यज्ञकर्त्ता के घरमें विद्या यौवन-सम्पन्न और शत्रुओं को पराजित करने वाला पुत्र पैदा हो। हमारे देश में मेघ इच्छानुकूल वृष्टि करें। हमारे देश में धान्यादि समस्त ओषधियाँ फलयुक्त होकर पकें। हमारे देश में प्रत्येक मनुष्यको योग और क्षेम उसके उपयोग के लिये पर्याप्त हो।

जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादितरतश्चार्थेष्वभिज्ञः स्वराट्।
तेने ब्रह्महृदा य आदि कवये मुह्यन्ति यत्सूरयः॥
तेजोवारि मृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गो मृषा।
धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं सत्यं परं धीमहि॥१॥

धर्मः प्रोज्झितकैतवोऽत्र परमो निर्मत्सराणां सताम्।
वेद्यं वास्तवमत्र वस्तु शिवदं तापत्रयोन्मूलनम्॥
श्रीमद्भागवते महामुनिकृते किं वा परैरीश्वरः।
सद्यो हृद्यवरुध्यतेऽत्र कृतिभिः शुश्रूषुभिस्तत्क्षणात्॥२॥
निगमकल्पतरोर्गलितं फलं शुकमुखादमृतद्रवसंयुतम्।
पिबत भागवतं रसमालयं मुहुरहो रसिका भुवि भावुकाः॥

जिससे इस जगत्की सृष्टि स्थिति और प्रलय होता है, तथा जिसकी सत्तासे ही जगत् की सत्ता और जगत् के अभाव में भी जिसकी सत्ता निश्चित है और जो इन्द्रियके सब विषयोंका सर्वज्ञ तथा स्वतः प्रकाशमान् है, जिसने सृष्टि के आरम्भमें ब्रह्माको भी वेदोंका ज्ञान कराया, तथा जिसके विषयमें विद्वान् (ऋषि) लोग भी मुग्ध रह जाते हैं। जिसके सत्य स्वरूपमें त्रिगुणमयी सृष्टि उसकी सत्ता की दृष्टि से सत्य किन्तु तत्तत् नाम रूप आदि भेदों की दृष्टि से असत्य है, जैसे तेज, जल तथा मृत्तिका का विनिमय (सूर्य किरणों में मृगतृष्णा से जल, नदी की रेतों में जल तथा जलमें स्थलकी भ्रान्ति) होती है, जिसके ज्ञानमय प्रकाशसे माया छल, कपट आदि दूरही से निरस्त रहते हैं, उस परम सत्य स्वरूप ईश्वर का हम ध्यान करते हैं ॥२॥ श्रीमद्भागवत में उस निष्कपट परम धर्मका निरूपण है जो शुद्धहृदय मात्सर्यहीन एवं सत्पुरुषों के लिये वस्तुतः जानने योग्य है। तथा जो आध्यात्मिक,

आधिदैविक, आधिभौतिक तीनों तापोंको नाश करनेवाला और परम कल्याणको देनेवाला है। महामुनि भगवान् वेदव्यासजीके बनाये हुए इस श्रीमद्भागवतके आश्रय लेनेसे अन्य किसी भी साधन या शास्त्रकी आवश्यकता नहीं है। जो सज्जन अपने जन्मजन्मान्तरके पुण्योंसे श्रीमद्भागवतको सुननेकी इच्छा करते हैं उनके हृदयमें उसी समय भगवान् विष्णु स्वयं उपस्थित होकर कल्याण करते हैं॥ २॥ हे रसके मर्मको जाननेवाले भक्तिभाव पूर्णहृदय भक्तगण! वेदरूपी वृक्षका पूर्ण पका तथा गला हुआ और शुकदेव स्वरूप तोतेके मुख द्वारा अमृत-द्रवसे युक्त अर्थात् उसका प्रधान स्थान श्रीमद्भागवत रसका बारम्बार पान करो। जिस तरह तोतेका काटा हुआ फल अधिक मीठा होता है। उसी तरह श्रीशुकदेवजीके मुख कमलोंसे उच्चरित श्रीमद्भागवत भी अत्यन्त मधुर तथा प्रिय है; अतः इसका पान करो॥ ३॥

देव यज्ञ—

संकल्पः—मम गृहे पञ्चसूना जनित सकल दोष निवृत्तये देवयज्ञं (नित्यं होमम्) करिष्ये।

ततो हस्तपरिमितां चतुरस्रां भूमिं कुशैः परिसमूह्य तान् कुशानैशान्यां परित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्यश्रुवमूलेनत्रिरुल्लिख्य, उल्लेखन क्रमेणानामिकांगुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य जलेनाभ्युक्ष्य, अग्निदूतमितिमन्त्रेण अग्निं संस्थाप्य, परिस्तरणं विधाय अग्निं ध्यायेत्।

पूर्व दिशाकी ओर मुख करके पवित्र हो पूर्व लिखित संकल्प करे, तदनन्तर एक हाथ लम्बी-चौड़ी भूमिको कुशसे साफकर उसे ईशान कोणकी ओर त्याग दे। फिर गोबर और जलसे उसका संस्कार करे और श्रुवासे उस वेदीपर तीन रेखा खींचे। रेखाके क्रमसे अनामिका और अँगूठेसे मिट्टी उठावे, फिर जलसे वेदीको सींचकर—

अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवां आसादयादिह।

इस मन्त्रको पढ़कर अग्निकी स्थापना करे और अग्नि-रक्षार्थ काष्ठ या उपले रखकर अग्नि देवता का ध्यान नीचे लिखे मन्त्रों द्वारा करना चाहिये।

ॐ चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य। त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महादेवो मर्त्यां आविवेश॥

ॐ मुखं यः सर्वदेवानां हव्यभुक् कव्यभुक् तथा। पितृणां च नमस्तुभ्यं विष्णवे पावकात्मने॥

ततः ॐ पावकाग्नये नमः इति मन्त्रेण अग्निं सम्पूज्य हविष्यान्नेन शाकल्येन वा जुहुयात्।

इसके बाद 'ॐपावकाग्नये नमः' इस मन्त्रसे अग्नि की पूजा करके हविष्यान्न या शाकल्य का

हवन करना चाहिये ।

ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये नमम ॥१॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे नमम ॥ २ ॥ ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय नमम ॥३॥ ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये नमम ॥४॥ ॐ धन्वन्तरये स्वाहा इदं धन्वन्तरये नमम ॥५॥ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्योः स्वाहा इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमम ॥६॥ ॐ प्रजापतयें स्वाहा इदं प्रजापतये नमम ॥ ७ ॥ ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते नमम ॥ ८ ॥ ॐ देवकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा इदमग्नये नमम ॥ ९ ॥ ॐ मनुष्य कृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा इदमग्नये नमम ॥१०॥ ॐ पितृकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा इदमग्नये नमम ॥११॥ ॐ आत्मकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा इदमग्नये नमम ॥ १२ ॥ ॐ एनस एनसोऽवयजनमसि स्वाहा इदमग्नये नमम ॥ १३ ॥ ॐ यच्चाह मेनो विद्वांश्चकार यच्चाविद्वांस्तस्य सर्वस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा इदमग्नये नमम ॥ १४ ॥

प्रार्थना—

ॐ सप्त ते अग्ने समिधः सप्तजिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि । सप्त होत्राः सप्त धाता यजन्ति सप्त ज्योतिरापृणस्व घृतेन स्वाहा ॥

इसके बाद श्रुवासे भस्म लेकर त्र्यायुषं जमदग्नेः' से ललाट पर, कश्यपस्य त्र्यायुषम्' से ग्रीवामें, यद्दे. वेषुत्र्यायुषम्' से बाहुमूल में और तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्' से हृदय में भस्म लगाना चाहिये ।

पूर्वाभिमुखः पवित्रं धारयेत्, आचम्य, प्राणा-नायम्य संकल्पं कुर्यात् ।

ॐ अद्य० ममगृहे पंचसूना जनित सकल-दोषपरिहारपूर्वकं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थमहं वैश्वदेवं करिष्ये ।

भूतयज्ञ ।

इसके बाद पूर्व लिखित पंचभूत संस्कार पूर्वक अग्निकी स्थापना और पूजन-प्रार्थना करे ।

ॐ मुखं यः सर्वदेवानां हव्यभुक् कव्यभुक् तथा ।

पितृणां च नमस्तस्मै विष्णवे पावकात्मने ॥

इसके बाद फिर निम्नलिखित पाँच आहुतियाँ घीसे अग्निमें दें।

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे नमम ॥ १ ॥
ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये नमम ॥ २ ॥
ॐ गृह्येभ्यः स्वाहा इदं गृह्येभ्यो नमम ॥ ३ ॥
ॐ कश्यपाय स्वाहा इदं कश्यपाय नमम ॥ ४ ॥
ॐ अनुमतये स्वाहा इदमनुमतये नमम ॥ ५ ॥

इसके बाद जलपात्रके समीप नीचे लिखे मन्त्रोंको पढ़कर बलि दे।

ॐ पर्जन्याय नमःइदं पर्जन्याय नमम ॥१॥
ॐ अद्भ्यो नमः इदं पृथिव्यै नमम ॥ २ ॥
ॐ पृथिव्यै नमः इदं पृथिव्यै नमम ॥ ३ ॥

इसके बाद जल या भस्मसे चौकोर मण्डल बनावे। उसके द्वार पर दक्षिण तथा उत्तर तरफ नीचे लिखे दो मंत्रों से बलि दे।

ॐ धात्रे नमः इदं विधात्रे नमम ॥ १ ॥
ॐ विधात्रे नमः इदं विधात्रे नमम ॥ २ ॥

फिर क्रमशः पूर्वसे चारों दिशाओंमें ॐ वायवे नमः

इदं वायवे नमम इसी मंत्रसे बलि दे। फिर पूर्वसे प्रारम्भ कर चारों दिशाओंमें एक एक बलि नीचे लिखे मंत्रों से दे।

ॐ प्राच्यै नमः इदं प्राच्यै नमम। ॐ दक्षिणायै नमः इदं दक्षिणायै नमम। ओं पश्चिमायै नमः इदं पश्चिमायै नमम। ओं उदीच्यैनमः इदं उदीच्यै नमम।

फिर नीचे लिखे मंत्रसे मध्यमें तीन बलि पूर्व की ओर दे।

ॐ ब्रह्मणे नमः इदं ब्रह्मणेनमम। ॐ अन्तरिक्षाय नमः इदं अन्तरिक्षाय नमम। ॐ सूर्याय नमः इदं सूर्याय नमम।

इन तीनों बलियों के उत्तर दो बलि पूर्वकी ओर फिर दे।

ॐ विश्वेभ्यः देवोभ्यो नमः इदं विश्वेभ्यो देवोभ्यो नमम। ॐ विश्वेभ्यो भूतेभ्यो नमः इदं विश्वेभ्यो भूतेभ्यो नमम।

इसके उत्तर भी इसी तरह पूर्व की ओर दो बलि दे।

ॐ उषसे नमः इदमुषसे नमम। ॐ भूतानां

पतये नमः इदं भूतानां पतये नमम ।

फिर ब्रह्मादि की तीन बलियों से दक्षिण तरफ एक बलि दक्षिणामुख अपसव्य हो, बायाँ घुटना टेक पितृतीर्थ से दे ।

ॐ पितृभ्य स्वधा नमः इदं पितृभ्यो नमम ।

फिर सव्य हो आचमनकर उत्तराभिमुख हो ।

ॐ हन्तते सनकादि मनुष्येभ्यो नमः इदं हन्तते सनकादि मनुष्येभ्यो नमम ।

इस मन्त्रसे ॐ उषसे नमः के उत्तर तरफ एक बलि दे । फिर सनकादिकी बलि के उत्तर ।

ओं यक्ष्मै तत्वे निर्णेजनं नमः इदं यक्ष्मणे नमम ।

इस मन्त्र से बचे हुए अन्न की बलि दे ।

इसके अनन्तर सव्य होकर गो, श्वान, काक, अतिथि और कीटादिकों को मंत्रों का पाठ करता हुआ बलि प्रदान करे ।

गोग्रासः—सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्य राशयः । प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं, गावस्त्रैलोक्य मातरः ॥ इदमन्नं गोभ्यो नमम ॥

श्वानबलिः—द्वौ श्वानौ श्याम-शबलौ वैवस्वत कुलोद्भवौ । ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि स्यातामेताव

हिंसकौ । इदमन्नं श्वभ्यां नमम ।

काकबलिः——ऐन्द्र वारुणा वायव्याः सौम्या वै नैर्ऋतास्तथा । वायसाः प्रतिगृह्णन्तु भूमावन्नं मयार्पितम् । इदमन्नं वायसेभ्यो नमम ।

अतिथि-बलिः——देवा मनुष्याः पशवो वयांसि ।
सिद्धाश्च यक्षोरगदैत्यसंघाः ॥
प्रेताः पिशाचास्तरवः समस्ताः
येचान्नमिच्छन्ति मया प्रदत्तम् ॥
इदमन्नं देवादिभ्यो नमम ।

पिपीलिका कीट पतंग बलिः——पिपीलिकाः कीट पतङ्काद्याः । बुभुक्षिताः कर्मनिबाधबद्धाः ॥ तृप्त्यर्थमन्नं हि मया प्रदत्तम् । तेषामिदन्ते मुदिताः भवन्तु ॥ इदमन्नं पिपीलिकादिभ्यो नमम ।

भोजन विधि——

प्रसङ्गाद्गात्रसंस्पर्शान्निःश्वासात् सहभोजनात् ।
सहशय्यासनाच्चापि वस्त्रमाल्यानुलेपनात् ॥
कुष्ठं ज्वरश्च शोषश्च नेत्राभिस्यन्द एव च ।

औपसर्गिकरोगाश्च संक्रामन्ति नरान्नरम् ॥

वार्तालाप, गात्रस्पर्श, निःश्वास, सहभोजन, शयन, वस्त्र या माला धारण द्वारा शरीर से शरीरान्तर में कुष्ठ, ज्वर, शोष, नेत्राभिस्यन्द, विषूचिका और चेचक आदि संक्रामक रोग आक्रमण कर देते हैं। अतः स्पृश्य विज्ञान उपेक्षणीय नहीं सर्वथा पालनीय है।

(भोजनके समय स्थान निर्देश)

उपलिप्ते समे भूमौ शुचौ लध्वासनान्वितः।

लिपी हुई, समतल, पवित्र भूमिपर लघु आसन पर बैठकर भोजन करना चाहिये।

पञ्चार्द्रो भोजनं कुर्यात् प्राङ्मुखो मौनमास्थितः।
हस्तौ पादौ तथैवास्यमेषां पञ्चार्द्रता मता ॥

हाथ, पाँव और मुख धोकर पूर्वमुख मौन होकर भोजन करे।

भोजन पदार्थ और तरीका

उष्णं स्निग्धं मात्रावज्जीर्यं वीर्याविरुद्ध मिष्टदेशे इष्टं सर्वोपकरणं नातिद्रुतं नातिविलम्बितं न जल्पन् न हसंस्तन्मना भुञ्जीत आत्मानमभिसमीक्ष्य सम्यक्।

अर्थात्—उष्ण, स्निग्ध, परिमित, खाते हुए अन्न परिपाक

होनेपर स्वभावके अनुकूल, पवित्र स्थानमें मनके अनुकूल भोजन करे, बहुत जलदी या बहुत बोलना या हँसना भी निषिद्ध है। अन्न में मन लगाकर आत्माकी ओर लक्ष्य करके भोजन करना योग्य है।

भोज्य पदार्थ पवित्र और सात्त्विक हो क्योंकि भोजन का प्रभाव मनपर पड़ता है। यदि अन्न तामसिक हो तो मन तामसिक होगा जिससे अच्छे कार्यों में प्रवृत्ति न होगी। इसी तरह राजसिक अन्न से भी बुद्धि और मन चञ्चल होगा, अतः पवित्र और सात्त्विक अन्न ग्रहण करे।

दध्नः सौम्यमथ्यमानस्य योऽणिमा' स उद्र्ध्वः समुद्रीषति तत् सर्पिर्भवति। एवमेव खलु सौम्यान्नस्य योऽणिमा स उद्र्ध्वः समुद्रीषति तन्मनोभवति। अन्नमयं हि खलु सौम्येदं मनः।

'आहार शुद्धौ सत्त्व शुद्धिः सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा· स्मृतिः, स्मृतिशुद्धौ सर्वग्रन्थीनां विमोक्षः।'

जैसे दधि मथने पर ऊपर घी आता है उसी तरह अन्नकाही अंश मन होता है। अतः मन अन्नमय है। यदि आहार शुद्ध हो तो सत्त्वशुद्धि, सत्त्वशुद्धि से ध्रुवा स्मृति, और स्मृति शुद्धि से

सभी ग्रन्थियों का मोचन होता है।

अतः सात्विक भोजन होना चाहिये राजसिक और तामसिक न हो।

लशुनं गृञ्जनञ्चैव पलाण्डुकरकानि च।
अभक्ष्याणि द्विजातीनाममेध्यप्रभवानि च॥

लहशुन, गाजर, पियाज, कुकुरमुत्ता तथा अपवित्र स्थान में उत्पन्न शाक आदि द्विजातियों के लिये अग्राह्य है।

भोजन करने के समय ब्राह्मण चौकोर, क्षत्रिय त्रिकोण और वैश्य गोला मण्डल भोजनपात्र के चारों ओर बनावे। यदि भोजन के लिये नीचे लिखी सभी विधिको न कर सके तो आपोशान के द्वारा तीन ग्रास अवश्य देना चाहिये।

आपोशान।

नीचे लिखे मन्त्र से एक एक ग्रास देकर जलको छोड़े।

ओं भूपतये स्वाहा ॥ १ ॥ ओं भुवन पतये स्वाहा ॥ २ ॥ ओं भूतानां पतये स्वाहा ॥ ३ ॥

इसके बाद "अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा" इस मंत्र से आचमन करे।

बाद में नीचे लिखे मन्त्रों से एक-एक ग्रास लेकर आचमन करके तब भोजन करे।

ओं प्राणाय स्वाहा॥१॥ओं अपनाय स्वाहा ॥२॥ ओं व्यानाय स्वाहा ॥३॥ ओं उदानाय स्वाहा ॥४॥ ओं समानाय स्वाहा ॥५॥

भोजन करनेके बाद 'ओं अमृतापिधानमसि स्वाहा' इस मंत्रको बोलकर आचमन करके और बचे हुए अन्नको नीचे लिखे मंत्रको पढ़कर दक्षिण दिशा की ओर त्यागकर दे।

मद्भुक्तोच्छिष्टशेषं ये भुञ्जन्ते पितरोऽधमाः।
तेषामन्नं मया दत्तं अक्षय्यमुपतिष्ठतु ॥

इसके अनन्तर मुख प्रक्षालन करके १६ कुल्ला करना चाहिये र फिर नीचे लिखा मन्त्र बोलकर अगस्त्यादि का स्मरण करना चाहिये।

अगस्त्यं कुम्भकर्णञ्च शनिं च वडवानलम्।
आहारपरिपाकाय संस्मरामि वृकोदरम् ॥
आतापी भक्षितो येन वातापी च महाबलः।

समुद्रः शोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु ॥
स्वयातिश्च सुकन्याश्च च्यवनं शक्रमश्विनौ ।
भोजनान्ते स्मरेद् यस्तु तस्य चक्षुर्न हीयते ॥
भुक्त्वा राजवदासीद् यावन्न विकृतिं गतः ।
ततः शतपदं गत्वा वामपार्श्वेन संविशेत् ॥

भोजनादि से निवृत्त होनेके बाद वीरासन से बैठे और बाद में कुछ थोड़ा घूमकर बायीं करवट सोना चाहिये ।

भुक्त्वोपविशतस्तुन्दं शयानस्य वपुर्महान् ।
आयुश्च क्रममाणस्य मृत्युर्धावति धावतः ॥

भोजन के बाद बैठे रहने से पेट और सोनेसे शरीर स्थूल होता है, टहलने से आयु बढ़ती है और भोजन करने के बाद दौड़ने से मृत्यु होती है ।

दिवा स्वप्नं न कुर्वीत स्त्रियं चैव परित्यजेत् ।
आयुः क्षीणा निद्रा दिवा स्त्री पुण्यनाशिनी ॥

दिनमें निद्रा तथा स्त्री-प्रसंग वर्जित है । दिन की निद्रा से आयु तथा मैथुन से पुण्य नष्ट होता है । इसलिये इन दोनों का त्याग करना श्रेयस्कर है ।

सायं-कृत्य—

सायं कृत्य में सायं सन्ध्या, देवोपासना आदि करे।

चत्वारि खलु कर्माणि सन्ध्याकाले विसर्जयेत्।
आहारं मैथुनं निद्रां स्वाध्यायञ्च चतुर्थकम् ॥

भोजन, रति, निद्रा, अध्ययन और अध्यापन इन चार कार्योंको सायंकाल न करे।

जिस घरमें सूर्यास्त से सूर्योदय तक दीप जलता है, उस घर में दरिद्रता नहीं रहती। सायंकाल दीपक जलाकर नीचे लिखी प्रार्थना करे और देवी देवताओं तथा गुरुजनोंको प्रणाम कर उनका आशीर्वाद ले।

दीपज्योतिः परमब्रह्म दीपज्योतिर्जनार्दनः।
दीपो हरतु मे पापं संध्यादीप नमोऽस्तु ते ॥
शुभं करोतु कल्याणं आरोग्यं सुखसम्पदाम्।
[illegible]बुद्धिप्रकाशञ्च दीपज्योतिर्नमोऽस्तुते ॥

रात्रि-कृत्य—

सायं कृत्य के बाद रात्रि-कृत्य में रात्रि भोजन प्रधान है। गृहस्थको रात्रि भोजन अवश्य करना चाहिये कहा भी है।

रात्रावभोजनं यस्य क्षीयन्ते तस्य धावतः।

अर्थात्—रात्रि में भोजन न करने से रस, रक्त और मांस आदि सात धातु क्षीण होते हैं।

शयन—

रात्रि शयन के विषय में शास्त्रों में यह निर्देश है।

मांगल्यं पूर्णकुम्भञ्च शिरःस्थाने निधापयेत्।
नार्द्रवासा न नग्नश्च नोत्तरापर मस्तकः॥

परदार सेवन की बड़ी निन्दा शास्त्रकारोंने की है—

नहीदृशमनायुष्यं लोके किञ्चन विद्यते।
यादृशं पुरुषस्येह परदारोपसर्पणम्॥
मृतो नरकमभ्येति हीयतेऽत्रापि चायुषः।
परदाररतिः पुंसामुभयत्र भयप्रदा॥

सोते समय इन वाक्यों का स्मरण करे फिर शुद्ध मन होकर शयन करना चाहिये।

विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम्।
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभो॥
अगस्तिर्माधवश्चैव मुचुकुन्दो महाबलः।
कपिलो मुनि स्वस्तीकः पञ्चैते सुखशायिनः॥

❋ इति ❋

हिन्दी भाषा में छपकर तैयार है !

भृगुसंहिता फलित सर्वांग दर्शन

ज्योतिष का अपूर्व ग्रन्थ

इस ग्रन्थ को पढ़कर आप जीवन-मरण, सन्तान, धनलाभ तथा अनेकानेक कठिन से कठिन प्रश्नों का उत्तर क्षणमात्र में दे सकते हैं, जो ब्रह्म वाक्य की भाँति अटल होगा। अतः ऐसी उपयोगी एक पुस्तक आप अपने पास अवश्य रखें। यह ग्रन्थ हजारों कुण्डलियों के सहित छपा है।

मूल्य १२) डाक व्यय सहित।

पुस्तक मिलने का पता—

ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर,

राजादरवाजा, ब्रांच—कचौड़ीगली, वाराणसी।

मुद्रक—बम्बई प्रेस, वाराणसी।

धर्मशास्त्र का महान् ग्रन्थ छप ग...

निर्णयसिन्धु भाषा-टीका

पं० दौलतराम गौड़ कृत—

ग्लेज कागज कपड़े की जिल्द सहित मूल्य ४०)

यही पुस्तक २ ... खण्डों में भी है प्रथम खण्ड २२)

द्वितीय खण्ड २०)

हमारे यहाँ की प्रकाशित पुस्तकें—

भृगुसंहिता फ...लित सर्वाङ्गदर्शन ले०-श्रीभगवानदास मित्तल १२)	हनुमानरहस्य पं. शिवदत्तमिश्र ६
मानसागरी भाषा-टी. ग्ले. १२)	होड़ाचक्र ब... २)५०
ज्योतिषसार भाषा-टीका ग्ले. ६)	गृहरत्नभूषण वास्तुसंग्रह १)२०
जातकाभरण भाषा-टीका ग्ले. ८)	रत्नदीप भाषा-टीका १ ३०
ताजिकनीलकण्ठी भाषा टीका ८)	शीघ्रबोध भाषा-टीका १)३०
भावकुतूहल भाषा-टीका ४,५०	सचित्र सामुद्रिक रहस्य लेखक-पं. कालिका प्रसादजी ५)
मुहूर्त्त चिन्तामणि ग्लेज ४)५०	हितोपदेश भाषाटीका संपूर्ण ४)
रमल दिवाकर की कुञ्जी ४)५०	शिवपुराण भाषा ब... १७)
लघुसंग्रह भाषा-टीका ३	सामुद्रिक कुञ्जिका २)५०
लग्नचन्द्रिका भाषा-टीका ३)	घाघभड्डुरी की कहावतें ०)५०
ग्रहफलदर्पण भाषा-टीका २)५०	जातकालङ्कार भाषा-टीका १)५०
लघुजातक २)५०	प्रेतमञ्जरी भाषा-टीका सहित २)

हर प्रकार की पुस्तक मिलने का पता—

ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर

रजादरवाजा, ब्राञ्च-कचौड़ीगली, वाराणसी।

बम्बई प्रेस, वाराणसी।